विशद

शान्ति भक्ति विधान

माण्डला

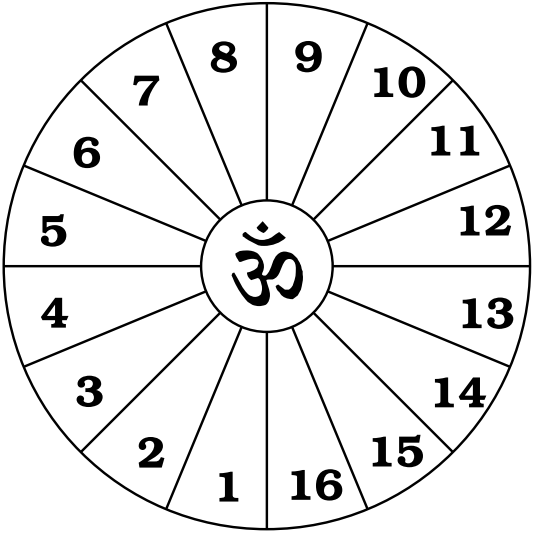

:: रचयिता ::

प. पू. क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति : **विशद श्री शान्तिभक्ति विधान**
कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागर महाराज
संस्करण : प्रथम 2018 **प्रतियाँ:** 1000
संकलन : मुनि श्री विशालसागर जी महाराज,
आर्यिका भक्ति भारती माताजी
सहयोगी : ऐलक विदक्षसागर जी, क्षु. विसोमसागर जी,
क्षुल्लिका वात्सल्य भारती
सम्पादन : ब्र. ज्योति दीदी, ब्र. आस्था दीदी,
ब्र. सपना दीदी, ब्र. सोनू दीदी,
9829127533
सम्पर्क सूत्र : ब्र. आरती दीदी
मूल्य : 30/- रु. मात्र

:: अर्थ सौजन्य ::

अमित जैन-पारुल जैन

सी-4ए/59बी, जनकपुरी, दिल्ली-110058. मो.: 9818236987

श्री विनोद जैन श्रीमती एकता जैन

सी-3/10 एस/एफ जनकपुरी न्यू दिल्ली-110058

मुद्रक : **पारस प्रकाशन,** दिल्ली
फोन नं. 9811374961, 9811363613
E-mail : pkjainparas@gmail.com

''श्री शान्तिनाथ व्रत विधि''

श्री शान्तिनाथ भगवान सोलहवें तीर्थंकर हैं साथ ही पाँचवें चक्रवर्ती एवं बारहवें कामदेव भी हुए हैं। इस प्रकार ये भगवान तीन पद के धारक महान हुए हैं। श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित शान्तिभक्ति साधुगण एवं श्रावकगण सभी में प्रसिद्ध है। उस शान्तिभक्ति का ही यह व्रत है। इसमें सोलह काव्य हैं वे सभी एक से एक महिमापूर्ण हैं। उन एक-एक काव्य का आश्रय कर यह व्रत करना चाहिए। इस व्रत के प्रसाद से स्वयं को शान्ति, सर्व व्याधियों का विनाश एवं सर्वकष्ट संकट आपदाओं का निवारण होगा। सर्वत्र मंगल होगा, घर में परिवार में मंगलमय वातावरण होगा देश में सुभिक्ष होगा, राजा प्रजा में धार्मिक भावनाएँ बनेगी व बढ़ेंगी अतः यह व्रत बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। **'श्री पूज्यपाद स्वामी'** जो कि हजार वर्ष पूर्व हुए हैं, एक समय उनकी **"नेत्र ज्योति मंद"** हो गई, उसी क्षण उन्होंने शान्तिनाथ चैत्यालय में बैठकर इस शान्तिनाथ भक्ति की रचना की, आठवें काव्य को पढ़ते ही **''दृष्टिं प्रसन्नां कुरू''** बोलते ही उनकी आँख की रोशनी वापस आ गई।

व्रत विधि-इस व्रत को किसी माह की शुक्ला अष्टमी

से प्रारंभ कर लगातार प्रत्येक मास की दो-दो अष्टमी ऐसे 16 अष्टमी यह व्रत करना चाहिए। व्रत की उत्तम विधि उपवास मध्यम अल्पाहार और जघन्य में एक बार शुद्ध भोजन करना एवं व्रत के दिन शान्ति भक्ति का 16 बार या कम से कम एक बार पाठ करना श्री शान्तिनाथ भगवान की पूजा जाप्य आादि करना। व्रत पूर्ण कर उद्यापन में **प.पू. आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** द्वारा रचित यह **श्री शान्तिभक्ति विधान** उत्साहपूर्वक करना। भगवान् शान्तिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराना, शान्ति भक्ति का 16 दिन अखंड पाठ करना अपनी शक्ति के अनुसार 16-16 उपकरण मंदिर में भेंट करना आदि है। व्रत पूर्ण कर भगवान की चार कल्याणक भूमि हस्तिनापुर एवं निर्वाण भूमि श्री सम्मेदशिखर की वंदना करना चाहिए।

जब भी शुक्ल पक्ष सोलह दिन का हो तो विधिवत 16 दिन का श्री शान्तिभक्ति विधान का अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए।

"जाप्य मन्त्र"

(1) ॐ ह्रीं संसारदु:खभीतभव्यगणशरण्याय श्रीशांतिनाथाय नम:।

(2) ॐ ह्रीं सर्वविघ्नशांतीकराय श्रीशांतिनाथाय नम:।

(3) ॐ ह्रीं प्रणतजनकष्टनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय नम:।

(4) ॐ ह्रीं स्तोतृणां मृत्युंजयपदप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नम:।

(5) ॐ ह्रीं चरणाम्बुजस्तुतिकर्तृणां सर्वरोगविनाशकाय श्रीशांतिनाथाय नम:।

(6) ॐ ह्रीं स्तवनप्रसादात् स्तोतृणां अचिन्त्यसार सौख्यप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नम:।

(7) ॐ ह्रीं चरणकमलाश्रितजनसर्वपापप्रणाशकाय श्रीशांतिनाथाय नम:।

(8) ॐ ह्रीं स्वपादपद्माश्रयिशान्त्यर्थिभाक्तिकानां दृष्टिप्रसन्नविधायकाय श्रीशांतिनाथाय नम:।

(9) ॐ ह्रीं शीलगुणव्रतसंयमपात्राय श्रीशांतिनाथाय नमः।

(10) ॐ ह्रीं पंचमचक्रिषोडशतीर्थंकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

(11) ॐ ह्रीं अशोकवृक्षाद्यष्टप्रातिहार्यसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।

(12) ॐ ह्रीं सर्वगणाय स्तुतिपाठकाय मह्यं च परमशांतीकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

(13) ॐ ह्रीं शक्रादिभिः स्तुतपादपद्माय सततशान्तिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

(14) ॐ ह्रीं संपूजक-प्रतिपालक-यतीन्द्रगण- देश-राष्ट्र-पुर- नृपतिगणशांतीकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

(15) ॐ ह्रीं क्षेम-धार्मिकनृपति-समयसमयवृष्टिकारकाय व्याधिदुर्भिक्षचौरिमारि-कष्टनिवारकाय सर्वसौख्यकर धर्मचक्रप्रवर्तकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

(16) ॐ ह्रीं केवलज्ञानभास्कर-जगत् शांतीकारकवृषभादि तीर्थंकरसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।

मुनि विशाल सागर

लघु विनय पाठ-1

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भवि जन को भव-सिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हो नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत॥9॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार॥10॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्पचरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ!।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ मैं भी गुणगान॥1॥
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन॥2॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्वजिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश॥
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरहमल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान॥

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण॥1॥
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥

॥ इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

आचार्य श्री का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर!, थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूं प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूलनायक सहित महासमुच्चय पूजा

स्थापना

अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जिन धर्म प्रधान।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, रत्नत्रय दश धर्म महान।।
सोलह कारण णमोकार शुभ, अकृत्रिम जिन चैत्यालय।
सहस्त्रनाम नन्दीश्वर मेरू, अतिशय क्षेत्र है मंगलमय।।
ॐर्जयन्त कैलाश शिखर जी, चम्पा, पावापुर, निर्वाण।
विहरमान तीर्थंकर चौबीस, गणधर मुनि का है आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म जिनागम-जिनचैत्य-जिन चैत्यालय-रत्नत्रय धर्म-दशधर्म-सोलहकारण-त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय सहस्त्रनाम-पंचमेरू-नन्दीश्वर सम्बन्धी चैत्य चैत्यालय-कैलाश गिरि-सम्मेद शिखर-गिरनार-चम्पापुरी- पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी-विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनिवराः अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव षट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

तीनों रोग महादुखदायी, उनसे हम घबड़ाए हैं।
निर्मलता पाने हे जिनवर!, प्रासुक जल यह लाए हैं।।

णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥1॥
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक प्राप्त सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण-रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिवरा: जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध की ज्वाला में हे स्वामी, सदा झुलसते आए हैं।
शीतलता पाने तव चरणों, चन्दन घिसकर लाए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥2॥
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद का ज्ञान जगाने, तव चरणों मे आये हैं।
अक्षय पदवी पाने हे जिन, अक्षत चरणों लाए हैं॥

णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम रोग से पीड़ित होकर, निज को ना लख पाए हैं।
शीलेश्वर बनने को चरणो, पुष्प संजोकर लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मग्न हुए प्रभु आतम रस में, क्षुधा रोग बिनसाए हैं।
निजगुण पाने को हे जिन, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।

देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटक रहे अज्ञान तिमिर में, चित् प्रकाश ना पाए हैं।
दीप जलाकर के यह घृत का, माह नशाने आए हैं।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि में कर्म खपा निज, गंध जगाने आये हैं।
सुरभित धूप सुगन्धित अनुपम, यहाँ जलाने लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस फल को पाया है तुमने, उस पर हम ललचाए हैं।
परम मोक्ष फल पाने हे जिन!, फल चरणों में लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धी पाने, तव चरणों में आए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा मोक्ष महापद पाऐंगे, करके शांती धार।
संयम धारण है विशद, इस जीवन का सार॥
।।शान्तये शान्तीधारा।।
रत्नत्रय को धारकर, पाऐंगे शिव पंथ।
होंगे कर्म विनाश सब, साधू बन निर्ग्रन्थ॥
।।इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत।।

जयमाला

दोहा- पूजा के शुभभाव से, कटे कर्म जंजाल।
महा समुच्चय रूप से, गाते हम जयमाल॥
(शम्भू छन्द)
कर्म घातियाँ नाश किए जो, वह अर्हत् कहलाते हैं।
कर्म रहित हो ज्ञान शरीरी, सिद्ध महापद पाते हैं॥
पंचाचार का पालन करते, रत्नत्रयधारी आचार्य।
उपाध्याय से शिक्षापाते, धर्म भावनाधारी आर्य॥1॥
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतू, सर्व साधू नित करते यत्न।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण हम, पूज रहे हैं तीनों रत्न॥
जिनवर कथित धर्म है पावन, श्रेष्ठ अहिंसामयी परम।
अंग बाह्य अरू अंग प्रविष्ठी, रूप कहाँ है जैनागम॥2॥
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य लोक में, कहे गये है मंगलकार।
घंटा तोरण ध्वज कलशायुत, चैत्यालय सोहे मनहार॥

देव शास्त्र गुरू की पूजा से, होता जीवों का कल्याण।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीस चौबीसी रही महान॥3॥
पाँच विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान कहलाए बीस।
जम्बू शाल्मलि तरू शाख के, जिन पद झुकाए रहे हम शीश॥
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप जान।
त्यागाकिन्चन ब्रह्मचर्य दश, धर्म कहे शिव के सौपान॥4॥
दर्श विशुद्धी आदिक सोलह, कारण भावना है शुभकार।
काल अनादि कष्ट निवारक, महामंत्र गाया णवकार॥
सहसनाम हैं तीर्थंकर के, जिनका जीव करें गुणगान।
नन्दीश्वर है दीप आठवाँ, जिस पर जिनगृह में भगवान॥5॥
पंच मेरू में रहे चार वन, भद्रशाल नन्दन शुभकार।
तृतीय रहा सौमनस पाण्डुक, चौथा कहा है मंगलकार॥
चारों वन की चतुर्दिशा में, अकृत्रिम शास्वत् जिनधाम।
रहे कुलाचल गजदन्तों पर, जिनबिम्बों पद विशद प्रणाम॥6॥
है निर्वाण क्षेत्र मंगलमय, अतिशय क्षेत्र हैं अपरम्पार।
सहस्रकूट शुभ समवशरण है, मानस्तंभ भी मंगलकार॥
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गाये चौबीस।
पंच भरत ऐरावत में सब, तीर्थंकर हैं सात सौ बीस॥7॥
चौदह सौ बावन गणधर, कई वर्तमान के अन्य मुनीश।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ चौंसठ जानो, पावन गाए सप्त ऋषीष॥

भरत बाहुबली पाण्डव हुनमान, और पूजते लव कुश राम।
पञ्च बालयति सर्व ऋद्धियाँ, और पूजते हम शिव धाम॥8॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पूज रहे पाँचों कल्याण।
जन्म भूमि है तीर्थ अयोध्या, जिसका रहे सदा श्रद्धान॥
हम प्रत्यक्ष परोक्ष यहाँ से, पूज रहे सब तीरथ धाम।
वचन काय मन तीन योग से, करते बारम्बार प्रणाम॥9॥

दोहा- पूजन की है भाव से, किया अल्प गुणगान।
जीवन शांती मय बने, पाएँ ''विशद'' कल्याण॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर श्री नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण-रत्नत्रय-दश धर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर, त्रिलोक एवं त्रिकाल सम्बन्धी समस्त कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सिद्धक्षेत्र-अतिशय क्षेत्र त्रिकाल तीस चौबीसी विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनीश्वेरभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हो प्रभावना धर्म की, हो शासन जयवन्त।
अन्तिम है यह भावना, पाएँ भव का अन्त॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत।।

शांतीभक्ति

शार्दूल विक्रीडित छंद

न स्नेहाच्छरणं प्रयन्ति भगवन्! पादद्वयं ते प्रजा।
हेतुस्तत्र विचित्रदु:खनिचय:, संसारघोरार्णव:।।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकर - व्याकीर्णभूमण्डलो।
ग्रैष्म: कारयतीन्दुपादसलिल-च्छायानुरागं रवि:।।1।।

क्रुद्धाशीविषदष्टदुर्जयविष - ज्वालावलीविक्रमो।
विद्याभेषजमन्त्रतोयहवने - र्याति प्रशांतीं यथा।।
तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुग - स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्।
विघ्ना: कायविनायकाश्च सहसा, शाम्यन्त्यहो! विस्मय:।।2।।

संतप्तोत्तमकांचन क्षितिधर - श्रीस्पर्द्धिगौरद्युते।
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्, पीडा: प्रयान्ति क्षयं।।
उद्यद्भास्करविस्फुरत्कर शत - व्याघातनिष्कासिता।
नानादेहिविलोचनद्युतिहरा, शीघ्रं यथा शर्वरी।।3।।

त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजया - दत्यन्त रौद्रात्मकान्।
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो, जीवस्य संसारिण:।।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना, कालोग्र दावानलान्-
न स्याच्चेत्तव पादपद्मयुगल स्तुत्यापगा वारणम्।।4।।

लोकालोक निरन्तर प्रविटत - ज्ञानैकमूर्ते! विभो!
नानारत्न पिनद्ध दंड रुचिर - श्वेतातपत्रतय!॥
त्वत्पाद द्वय पूत गीत रवतः, शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदा - द्वन्या यथा कुञ्जराः॥5॥

दिव्यस्त्रीनयनाभिराम! विपुल - श्रीमेरुचूड़ामणे!
भास्वद् बालदिवाकरद्युतिहर - प्राणीष्टभामंडल!॥
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं, त्यक्तोपमं शाश्वतं।
सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगल - स्तुत्यैव संप्राप्यते॥6॥

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः, श्रीभास्करो भासयंस्-
तावद् - धारयतीह पंकजवनं, निद्रातिभारश्रमम्॥
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्-न स्यात्प्रसादोदयस्-
तावज्जीवनिकाय एष वहति, प्रायेण पापं महत्॥7॥

शांतीं शान्तिजिनेन्द्र! शांतमनस-स्त्वत्पादपद्माश्रयात्।
संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः, शांत्यर्थिनः प्राणिनः॥
कारुण्यान्मय भाक्तिकस्य च विभो! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः, शांत्यष्टकं भक्तितः॥8॥

शांतीजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम्॥9॥

पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्र-नरेन्द्रगणैश्च।
शांतीकरं गणशांतीमभीप्सुः, षोडशतीर्थंकरं प्रणमामि॥10॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टि - र्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः॥11॥
तं जगदर्चितशांतीजिनेन्द्रं, शांतीकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतीं, मह्यमरं पठते परमां च॥12

येभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः॥
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः।
तीर्थंकराः सततशांतीकरा भवंतु॥13॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतीं भगवान् जिनेन्द्रः॥14॥
क्षेमं सर्वप्रजानां, प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग्वर्षतु, मघवा व्याधयो यांतु नाशं॥
दुर्भिक्षं चौरिमारी, क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं, प्रभवतु सततं, सर्वसौख्यप्रदायि॥15॥
प्रध्वस्तघातिकर्माणः, केवलज्ञानभास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शांतीं, वृषभाद्या जिनेश्वराः॥16॥

पूर्णार्घ्य (क्षेपक श्लोक)

शांती शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां,
शान्तिः निरन्तर तपोभव भावितानां।

शान्तिः कषाय जय जृम्भित वैभवानानां,
शान्तिः स्वभाव महिमानमुपागतानाम्॥1॥
जीवन्तु संयम सुधारस पान तृप्ता,
नंदतु शुद्ध सहसोदय सुप्रसन्ना।
सिद्धयंतु सिद्धि सुख संगकृताभियोगाः,
तीव्रं तपन्तु जगतां त्रितयेऽर्हदाज्ञा॥2॥

शान्तिः शंतनुतां समस्त जगतः, संगच्छतां धार्मिकैः, श्रेयः श्री परिवर्धतां नयधरा, धुर्यो धारित्री पतिः॥ सद्विद्यारसमुद्गिरन्तु कवयो, नामाप्य धस्यास्तु मां। प्रार्थ्यं वा कियदेक एव, शिवकृद्धर्मो जयत्वर्हताम्॥3॥

अंचलिका

इच्छामि भंते! संति भक्ति-काउस्सगो कओ, तस्सालोचेउं पंच-महा-कल्याण-संपण्णानं, अट्ठमहापाहिडेर-सहियाणं, चउतीसातिसय-विसेस-संजुत्ताणं, बत्तीस-देवेंद-मणिमय मउड मत्थय महियाणं बलदेव वासुदेव चक्कहर रिसि-मुणि- जदि-अणगारोव गूढाणं, थुई-सय-सहस्स-णिलयाणं, उसहाइं-वीर-पच्छिम-मंगलं-महापुरिसाणं णिच्चकालं, अच्चेमि, पूज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइमगणं समाहि-मरणं जिण गुण सम्पत्ति होदु मज्झं। ।।श्री शान्तिनाथायः नमः।।

श्री शान्ति भक्ति मण्डल पूजा विधान

स्थापना

शांतिनाथ है नाम आपका, करते जग को शांती प्रदान।
शांती पाने का इच्छुक मैं, करूँ हृदय से प्रभु आह्वान।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे शान्तिनाथ करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।

दोहा- परम शांती के कोष जिन, करते शांती प्रदान
शांतिनाथ तीर्थेश का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं परम शान्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आहवाननं्।

ॐ ह्रीं परम शान्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं परम शान्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छंद)

निर्मल वचन न निर्मल मन है, निर्मल न मम काया है।
आतम स्वच्छ नहीं हो पाई, पाप कर्म की माया है।।
यह निर्मल प्रासुक जल अनुपम, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
हम शांतिनाथ तीर्थेश चरण में, शांती पाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं महाशांती प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बचपन क्रीड़ा में गुजर गया, विषयों में गई जवानी है।
भौंरा सम भ्रमण किया जग में, आगम की सीख न मानी है॥
अब चंदन घिसकर के सुरभित, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
श्री शांतिनाथ तीर्थेश चरण में, शांती पाने आए हैं॥2॥
ॐ ह्रीं महाशांति प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
पद के मद ने मदहोश किया, माया ने मन को ललचाया।
चिन्ता ने चिता बना डाला, न अक्षय पद हमने पाया॥
अक्षय यह श्रेष्ठ धवल अतिशय, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
श्री शांतिनाथ तीर्थेश चरण में, शांती पाने आए हैं॥3॥
ॐ ह्रीं महाशांती प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
सौन्दर्य लुभाता जीवों को, मन काम वासना में भटके।
विषयों की आशा में फँसकर, कर्मों के फंदे में लटके॥
यह पुष्प श्रेष्ठ अनुपम सुरभित, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
श्री शांतिनाथ तीर्थेश चरण में, शांती पाने आए हैं॥4॥
ॐ ह्रीं महाशांती प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
रसना रस की लोलुपता ये, मन को व्याकुल कर देती है।
जब क्षुधा सताती प्राणी को, बुद्धी उसकी हर लेती है॥

अब ताजे शुभ यह नैवेद्य बना, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
श्री शांतिनाथ तीर्थेश चरण में, शांती पाने आए हैं।।5।।
ॐ ह्रीं महाशांती प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया है मोह का अंधियारा, उसमें अनादि से भरमाया।
बाहर में दीप जलाए कई, न ज्ञान का दीपक प्रजलाया।।
यह दीप जलाकर रत्नमयी, हम आत्मशुद्धि को लाए हैं।
श्री शांतिनाथ तीर्थेश चरण में, शांती पाने आए हैं।।6।।
ॐ ह्रीं महाशांती प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से नाता जोड़ा है, कर्मों ने हमको उलझाया।
हम फँसे भँवर में कर्मों के, निष्कर्म भाव न मन भाया।।
यह धूप दशांगी अग्नी में, हम खेने हेतू लाए हैं।
श्री शांतिनाथ तीर्थेश चरण में, शांती पाने आए हैं।।7।।
ॐ ह्रीं महाशांती प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल मन को तृप्त करें, मुक्ती फल की क्या बात अहा।
जो सिद्धी तुमने पाई है, वह पाना मेरा लक्ष्य रहा।।
श्री फल आदिक कई ताजे फल, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
श्री शांतिनाथ तीर्थेश चरण में, शांती पाने आए हैं।।8।।
ॐ ह्रीं महाशांती प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग वैभव को अपना कह कर, यह जग वैभव में उलझाया।
जब कर्म उदय में आया तो, कोई भी काम नहीं आया॥
अब पद अनर्घ्य पाने हेतू, हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
श्री शांतिनाथ तीर्थेश चरण में, शांती पाने आए हैं॥9॥

ॐ ह्रीं महाशांती प्रदायक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीभक्ति जो पढ़े, सब संकट मिट जाय।
रोग शोक दुख दूर हों, क्षण में शांती पाय॥

(शान्तये शांतीधारा)

दोहा- शांतिनाथ के पदयुगल, झुका रहे हम शीश।
मुक्ती हमको दीजिए, मुक्ती पद के ईश॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

पंचकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, विश्वसेन नृप के गृह मानो।
रत्न वृष्टि को इन्द्र पधारे, बोले प्रभु के जय-जयकारे॥1॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ वदी चौदश शुभकारी, हस्तिनापुर में मंगलकारी।
माँ ऐरावति के गृह आए, जिनके चरणों माथ झुकाए॥2॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ वदी चौदश मनहारी, जिनवर शांतिनाथ शिवकारी।
जैन दिगम्बर दीक्षा धारे, लोग किये तव जय-जयकारे॥3॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष सुदी दशमी दिन पाए, कर्म घातिया आप नशाए।
निज आतम में रमने वाले, केवलज्ञानी आप निराले॥4॥

ॐ ह्रीं पौष सुदी दशम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूट कुन्दप्रभ पे प्रभु आए, ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशि पाए।
वसु कर्मों का नाश किया है, नर जीवन का सार लिया है॥5॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- महिमा गाने आपकी, हुए आज वाचाल।
शांतिनाथ भगवान की, गाते हैं जयमाल॥

चौपाई

शांतिनाथ शांती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
जो हैं जन-जन के उपकारी, तीन लोक में मंगलकारी॥

सर्वार्थसिद्धि से चय कर आये, हस्तिनागपुर धाम बनाए।
हुई रत्न वृष्टि शुभकारी, तीन लोक में विस्मयकारी।।
इन्द्रराज ऐरावत लाया, प्रभु के पद तब शीश झुकाया।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया, उसने अतिशय पुण्य कमाया।।
आनन्दोत्सव महत मनाया, तन मन से जो शुभ हर्षाया।
प्रभु की भक्ति की जो भारी, हर्षित हुए सभी नर नारी।।
प्रभु ने संयम को अपनाया, तपकर केवलज्ञान जगाया।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जग को मोक्ष मार्ग दिखलाए।।
तीर्थ बने कई अतिशयकारी, जो भक्तों के संकटहारी।
प्रभु अर्चा कर पुण्य कमाएँ, भव्य भक्ति करके हर्षाएँ।।
मन में यही भावना भाएँ, बार-बार हम दर्शन पाएँ।
दर्शन कर श्रद्धान जगाएँ, पूजा करके ज्ञान उपाए।।
मोक्ष महल जब तक न पाएँ, तब तक तुमको हृदय बसाएँ।
विशद भावना यही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी!।।

दोहा- शांती पाने हम यहाँ, आए शांतीनाथ।
पूर्ण करो आशा मेरी, झुका रहे पद माथ।।

ॐ ह्रीं सर्वसंकटहारी महाशांती प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांतिनाथ के पद युगल, झुका रहे हम शीश।**
मुक्ती हमको दीजिए, मुक्ती पद के ईश॥

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घावली

दोहा- **शांतीभक्ति जो पढ़े, सब संकट मिट जाय।**
रोग शोक दुख दूर हों, क्षण में शांती पाय॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत)

(शार्दूल विक्रीडित छंद)

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन! पादद्वयं ते प्रजाः।
हेतुस्तत्र विचित्र दुःख निचयः संसार घोरार्णवः॥
अत्यन्त-स्फुर दुग्र रश्मि निकर, व्याकीर्ण भूमण्डलो।
गैष्मः कारयतीन्दु पाद सलिल, च्छायानुरागं रविः॥1॥

पद्यानुवाद

चरण शरण को प्राप्त करें न, भव्य जीव तव हे भगवान!।
भव सागर है कारण जिसमें, अरु विचित्र कर्मों की खान॥
अती दैदीप्य उग्र किरणों से, भूमण्डल सारा ढक जाय।
ग्रीष्म सुरवि ज्यों चन्द्र किरण अरु, जल छाया से नेह कराय॥॥

ॐ ह्रीं संसार दुःख भीत भव्य गणशरण्याय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रुद्धाशीर्विष दष्ट दुर्जय विष ज्वालावली विक्रमो,
विद्या भेषज मन्त्र तोय हवनै-र्याति प्रशान्तिं यथा।
तद् वत्ते चरणारुणाम्बुज युग स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्।
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः॥2॥
ज्यो क्रोधित फणधर डसने से, दुर्जय विष ज्वाला के योग।
विद्या औषधि मंत्र हवन जल, शांत होय पाकर संयोग॥
तव चरणाम्बुज की स्तुति से, शीघ्र विघ्न सब होवें दूर।
शांत होय तन की बाधाएँ, क्या विस्मय इसमें भरपूर॥2॥
ॐ ह्रीं सर्वविघ्न शांती कराय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्तप्तोत्तम काञ्चन क्षितिधर श्री-स्पर्द्धि गौरद्युते,
पुंसा त्वच्चरणप्रणाम करणात् पीडाः प्रयन्तिक्षयं।
उद्यद्भास्कर विस्फुरत्कर शतव्याघात निष्कासिता,
नाना देहि विलोचन-द्युतिहरा शीघ्र यथा शर्वरी॥3॥
तप्त स्वर्ण गिरि की कांति को, फीका करती जिनकी देह।
जीवों की पीड़ा क्षय होती, प्रणत पाद करने से येह॥
उदित सुरवि किरणों की दीप्ती, के आघात से निकल रही।
नेत्र कांति को हरने वाली, रात्रि शीघ्र क्षय रूप कही॥3॥
ॐ ह्रीं प्रणतजन कष्ट निवारकाय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैयोक्येश्वर भंग लब्ध विजयादत्यन्त रोद्रात्मकान्,
नाना जन्मशतान्तरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्र दावानलान,
न स्याच्चेत्तव पाद पद्म युगल स्तुल्यापगा वारणम्।।4।।
त्रय लोकेश्वर के विनाश से, विजय प्राप्त हो गये अति क्रूर।
उसी काल की दावाग्नी से, जग में बच पाना अति दूर॥
नाना शतक जन्म के अन्दर, संसारी जीवों के अग्र।
पाद पद्म द्वय स्तुति सरिता, क्या वरण न करे समग्र॥4॥
ॐ ह्रीं स्तोतृणां मृत्युंजय पद प्रदायकाय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक निरन्तर प्रवितत् ज्ञानैक मूर्त्ते विभो,
नाना रत्न पिनद्ध दण्ड रुचिर श्वेतातपत्रत्रय।
त्वत्पाद द्वय पूत गीत रवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामया,
दर्पाध्यातमृगेन्द्रभीम निनदाद् वन्या यथा कुञ्जराः।।5।।

लोकालोक में एक निरन्तर, विस्तृत ज्ञान मूर्ति हे नाथ!
नाना रत्न जड़ित सुन्दर शुभ, श्वेत छत्र त्रय जिनके माथ॥
प्रभु के चरण युगल की स्तुति, रव से रोग शीघ्र हों दूर।
मात्र सिंह के गर्जन से ज्यों, गजभागें भय से भरपूर॥5॥
ॐ ह्रीं चरणाम्बुज स्तुतिकर्तणां सर्वरोग विनाशकाय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य स्त्री नयनाभिराम विपुल श्रीमेरु चूड़ामणे।
भास्वद बाल दिवाकर-द्युति हर प्राणीष्ट भामण्डल॥
अव्याबाध मचिन्त्य सार मतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतम्।
सौख्यं त्वच्चरणारविन्द युगल स्तुत्यैव सम्प्राप्यते॥6॥
दिव्य स्त्री के नयन प्रिय हे! विपुल श्री चूड़ामणि श्रेष्ठ।
बाल सूर्य के द्युति हारी शुभ, भामण्डल युत भवि के इष्ट॥
अव्याबाध अचिन्त्य अतुल शुभ, अनुपम सारभूत अविनाश।
तव चरणारविन्द युगलों की, स्तुति से हो सुख में वास॥6॥
ॐ ह्रीं स्तवन प्रसादात् स्तोतृणां अचिन्त्य सार सौख्य प्रदायकाय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
यावन्नोदयते प्रभा परिकरः श्री भास्करो भासयंस,
तावद् धारयतीह पंकजवनं निद्राति भार श्रमम्।
यावत्वच्चरण द्वयस्य भगवन! नस्यात् प्रसादोदयस्
तावज्जीव निकाय एष वहति प्रायेण पापं महत्॥7॥
सूर्य तेज किरणों से जब तक, नहीं उदित हो करें प्रकाश।
पंकज वन इस लोक में तब तक, निद्रा भार के श्रम से खास॥
चरण द्वय रवि के प्रसाद का, उदय नहीं हो हे भगवान!।
तब तक जीवों का समूह यह, प्रायः पाप करे बहु जान॥
ॐ ह्रीं चरण कमलाश्रित जन सर्व पाप प्रणाशकाय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिं शान्ति जिनेन्द्र शान्त, मनसस्त्वत्पाद पद्माश्रयात्।
संप्राप्ताः पृथिवी तलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः।
कारुण्यान् मम भक्ति कस्य च विभो! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु,
त्वत्पाद द्वय दैवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः॥8॥

शांती मनः शांती के इच्छुक, पृथ्वी तल पर शांति जिनेश।
बहु प्राणी तव चरण कमल के, आश्रय से हों शांत विशेष॥
तव चरणों को देव मान प्रभु, भक्त सदा भक्ती के साथ।
शान्त्यष्टक सम्यक्त्व हेतु शुभ, निर्मल दया भाव हो नाथ!॥8॥
ॐ ह्रीं स्वपाद पद्माश्रयि शान्त्यर्थि भक्तिकानां दृष्टि प्रसन्न विधायकाय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति जिनं शशि निर्मल वक्त्रं शील गुणं व्रत संयम पात्रम्।
अष्ट शतार्चित लक्षण गात्रं, नौमि जिनोत्तम मम्बुज नेत्रम्॥9॥

चन्द्र समान सुमुख अति निर्मल, संयम व्रत धारी गुणवान।
शील अठारह सहस देह में, लक्षण एक सौ आठ महान्॥
कमलाशन पर शोभित हैं जो, जिन उत्तम हे शांतीनाथ!।
शत् इन्द्रों से पूज्य आपके, चरणों झुका रहे हम माथ॥9॥
ॐ ह्रीं शीलगुण व्रत संयम पात्राय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम मीप्सित-चक्रधराणां, पूजित मिन्द्र-नरेन्द्र गणैश्च।
शान्ति करं गण-शान्ति मभीप्सुः षोडश तीर्थंकर प्रणमामि॥10॥
ईप्सित चक्रवर्तियों में से, चक्रवर्ति थे जो पञ्चम।
इन्द्र नरेन्द्रों के समूह से, पूजित रहे विशद हरदम॥
शांती करने वाले जग में, शांतिनाथ है जिनका नाम।
महाशांति की इच्छा से मैं, शांती जिन को करूँ प्रणाम॥10॥
ॐ ह्रीं पंचम चक्रि षोडश तीर्थंकराय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य तरुः सुर पुष्प-सुवृष्टि र्दुदुभिः-रासन योजन घोषौ।
आतप-वारण चामर-युग्मे, यस्य विभाति च मण्डलतेजः॥11॥
दिव्य तरु सुर पुष्प वृष्टि हो, दिव्य ध्वनि शुभ सिंहासन।
दोनो ओर चँवर ढुरते हैं, भामण्डल अति मन भावन॥
दुन्दुभि नाद होय छत्र त्रय, शोभित होते शांतिनाथ।
प्रातिहार्य से युक्त श्री जिन, को हम झुका रहे हैं माथ॥11॥
ॐ ह्रीं अशोक वृक्षाद्यष्ट प्रातिहार्य समन्विताय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तं जगदर्चित शान्ति जिनेन्द्रं, शान्ति करं शिरसा प्रणमामि।
सर्व गणायतु यच्छतु शान्तिं, महयमरं पठते परमां च॥12॥
सर्व जगत में पूज्यनीय हैं, शांती कर हे शांतिनाथ!।
विशद भाव से वन्दन करता, चरण झुकाऊँ अपना माथ॥

सर्व जगत् को शीघ्र करो हे, शांतिनाथ! शुभ शांति प्रदान।
स्तुति पढ़ने वाला हूँ मैं, दीजे मुझे शांति का दान॥12॥
ॐ ह्रीं सर्व गणाय स्तुति पाठकाय महयं च परम शांतीकराय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुण्डल-हार-रत्नैः,
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुत-पादपद्माः।
ते मे जिनाः प्रवर-वंश-जगत्प्रदीपाः,
तीर्थंकरा सतत शान्तिकरा भवन्तु॥13॥

सुरगण से स्तुत हैं जिनके, चरण कमल सुन्दर छविमान।
कर्णाभरण हार कुण्डल से, रत्न मुकुट से जिनकी शान॥
इन्द्र पूजते हैं जिनको वे, श्रेष्ठ वंश के जगत् प्रदीप।
तीर्थंकर श्री शांती जिन मम्, शांती देने रहें समीप॥13॥
ॐ ह्रीं शक्रादिभिः स्तुत पाद पद्माय सतत शान्तिकराय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूजकानां प्रतिपालकानां,
यतीन्द्र - सामान्य - तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः,
करोतु शान्तिं भगवान-जिनेन्द्रं॥14॥

धर्म आयतन के रक्षक हैं, पूजा करते भली प्रकार।
मुनियों के है इन्द्र तपस्वी, श्रेष्ठ रहे जग के आचार्य।

देश राष्ट्र राजा को अनुपम, नगरवासियों को भी साथ।
शांति दीजिए शांति प्रदाता, हे जिनेन्द्र! श्री शांतीनाथ॥14॥

ॐ ह्रीं संपूजक-प्रतीपालक-यतीन्द्रगण-देश-राष्ट्र-पुर- नृपतिगण शांतीकराय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेमं सर्व प्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग्वितरतु मघवाव्याधयो यान्तु नाशम्॥
दुर्भिक्षं चौरमारिः क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीव-लोके।
जैनेन्द्रम् धर्म चक्रम प्रभवतु सततं सर्व-सौख्य प्रदायि॥15॥

हो कल्याण प्रजा का सारी, धार्मिक हो राजा बलवान।
जल वृष्टी हो यथा समय पर, जग में हो व्याधी की हान॥
चौर मारि दुर्भिक्ष जगत में, न हो क्षण के लिए हे नाथ!
सर्व सुखों कर धर्म चक्र शुभ, नित्य प्रभावशाली हो साथ॥15॥

ॐ ह्रीं क्षेम-धार्मिक नृपति-समय समय वृष्टिकारकाय व्याधि दुर्भिक्ष चौरिमारि कष्ट निवारकाय सर्वसौख्यकर धर्म चक्र प्रवर्तकाय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रध्वस्त घाति कर्माणः, केवलज्ञान भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं, वृषभाद्या जिनेश्वराः॥16॥

केवल ज्ञान रवी से शोभित, कर्म घातिया कीन्हे नाश।
वृषभ आदि तीर्थंकर जग में, शांती में देवे शुभ वास॥16॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञान भास्कर-जगत शांतीकारक वृषभादि तीर्थंकर समन्विताय श्री शांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (क्षेपक श्लोक)

शांती शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां,
शान्तिः निरन्तर तपोभव भावितानां।
शान्तिः कषाय जय जृम्भित वैभवानानां,
शान्तिः स्वभाव महिमानमुपागतानाम्।।1।।
जीवन्तु संयम सुधारस पान तृप्ता,
नंदतु शुद्ध सहसोदय सुप्रसन्ना।
सिद्धयंतु सिद्धि सुख संगकृताभियोगाः,
तीव्रं तपन्तु जगतां त्रितयेऽर्हदाज्ञा।।2।।
शान्तिः शंतनुतां समस्त जगतः, संगच्छतां धार्मिकैः,
श्रेयः श्री परिवर्धतां नयधरा, धुर्यो धारित्री पतिः।।
सद्विद्यारसमुद्गिरन्तु कवयो, नामाप्य धस्यास्तु मां।
प्रार्थ्यं वा कियदेक एव, शिवकृद्धर्मो जयत्वर्हताम्।।3।।

क्षेपक काव्य

शिरोधार्य जिन आज्ञा करते, शांती प्राप्त करें वे लोग।
तपश्चरण जो करें निरन्तर, पावें शांती का संयोग।।
जित कषाय मुनियों के उर में, समता रस का फूल खिले।
स्वाभाविक महिमा मण्डित जो, मुनियों को शिवराज मिले।।1।।

संयम रूपी अमृत पीकर, तृप्त हुए मुनि हों जयवंत।
आत्म तत्त्व का उदय प्राप्त कर, आनन्दित जग के सब संत॥
मोक्ष लक्ष्मी की प्राप्ती का, करते हैं दुस्सह उद्योग।
तीन लोक में जिन शासन की, हो प्रभावना का शुभ योग॥2॥
धर्मी के श्री श्रेय बढ़े शुभ, सर्व जगत में हो सुखकार।
नीतिवान नृप शूर वीर हो, ज्ञानी से हो ज्ञान प्रसार॥
एक प्रार्थना हो सब ही की, पाप नाम का होवे अन्त।
श्री जिनेन्द्र का वीतरागमय, शिवकृत धर्म रहे जयवन्त॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंचलिका

इच्छामि भंते! संति भक्ति-काउस्सगो कओ, तस्सालोचेउं पंच-महा- कल्याण-संपण्णानं, अट्ठमहापाहिडेर-सहियाणं, चउतीसातिसय- विसेस-संजुत्ताणं, बत्तीस-देवेंद-मणिमय मउड मत्थाय महियाणं बलदेव वासुदेव चक्कहर रिसि-मुणि-जदि-अणगारोव गूढाणं, थुई-सय-सहस्स-णिलयाणं, उसहाइं-वीर-पच्छिम-मंगलं-महापुरिसाणं णिच्चकालं, अच्चेमि, पूज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइमगणं समाहि-मरणं जिण गुण सम्पत्ति होदु मज्झं।

(अंचलिका)

कायोत्सर्ग किया जो मैंने, शांती भक्ति का हे भगवन्!।
इच्छा करता उस सम्बन्धी, विशद करूँ मैं आलोचन॥
महत् पञ्च कल्याणक संयुत्, प्रातिहार्य हैं अष्ट महान।
चौंतिस अतिशय से संयुक्त हैं, बत्तिस देव झुकें पद आन॥1॥
वासुदेव बलदेव चक्रधर, ऋषि मुनिवर अरु यति अनगार।
लाखों स्तुतियों के गृह हैं जो, वृषभादिक जिन मंगलकार॥
महापुरुष जो हुए सभी की, करूँ नित्य पूजन अर्चन।
वन्दन करता नमस्कार मैं, हृदय बसो मेरे भगवन!॥2॥
दु:खों का क्षय हो कर्मों का, पूर्ण रूप से होय विनाश।
रत्नत्रय की प्राप्ती हो मम्, श्रेष्ठ सुगति में होय निवास॥
मरण समाधी मैं पा जाऊँ, जिन गुण सम्पत्ती हो प्राप्त।
'विशद' ज्ञान को पाकर भगवन, मैं भी बन जाऊँ प्रभु आप्त॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अञ्चलिकारूप महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपामि)

जाप्य:- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नम:।

जयमाला

दोहा- शान्तिनाथ की भक्ति से, कटे कर्म का जाल।
भक्तिभाव से हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(अष्टक छन्द)

श्री शांतिनाथ की पूजा से, जीवों को शांती मिलती है।
जो श्रद्धा भक्ती हृदय धरे, तो ज्ञान रोशनी खिलती है।।
प्रभु पूर्व भवों में भी तुमने, सद् संयम को अपनाया था।
सर्वार्थ सिद्धि के सुख भोगे, ये पुण्य का ही फल पाया था।।
तैंतिस सागर की आयु पूर्ण, करके तुमने अवतार लिया।
प्रभु हस्तिनापुर में माता श्री, ऐरादेवी को धन्य किया।।
शुभ ज्येष्ठ वदी चौदश अनुपम, बालक ने भू पर जन्म लिया।
तब इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्रों ने, उत्सव आकर के महत् किया।।
सौधर्म इन्द्र ने बालक का, पाण्डुक वन में अभिषेक किया।
फिर शची ने चंदन चर्चित कर, बालक के तन को पौंछ दिया।।
दाँयें पग में लख हिरण चिन्ह, सौधर्म इन्द्र ने उच्चारा।
यह शांतिनाथ हैं तीर्थंकर, बोलो मिलकर सब जयकारा।।
अनुक्रम से वृद्धी को पाकर, फिर युवा अवस्था को पाया।
लखकर स्वरूप प्रभु के तन का, तब कामदेव भी शर्माया।।
फिर शांतीराज भी हुए विशद, श्री कामदेव पद के धारी।

बन गये चक्रवर्ती जिनवर, शुभ चक्र रत्न के अधिकारी॥
फिर जाति स्मरण को पाकर, वैराग्य भाव मन में आया।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, को संयम प्रभु ने अपनाया॥
फिर ध्यान अग्नि को पाकर के, प्रभु कर्म घातिया नाश किए।
फिर पौष शुक्ल की दशमी को शुभ, केवलज्ञान प्रकाश किए॥
श्री शांतिनाथ तीर्थंकर जिन, सोलहवें जग में कहलाए।
शुभ दिव्य देशना दिए आप, तब सुनने भव्य जीव आए॥
फिर ज्येष्ठ कृष्ण की चौदश को, प्रभु कर्म अघाती नाश किए।
श्री विश्व हितंकर शांतिनाथ, जिन मोक्ष महल में वास किए॥

दोहा- शान्ती भक्ति की यहाँ, पूजा रची विशाल।
श्रद्धा भक्ती जो करें, वे हों मालामाल॥

ॐ ह्रीं सर्वरोग-शोक-दुख-दारिद्र विनाशक महाशांती प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांति प्रभू के द्वार पर, होती पूरी आस।
जीवन सुखमय हो विशद, पूरा है विश्वास॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष॥

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

शांतीपाठ

शांतिनाथ शांती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतीपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांती जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांती पाएँ-3।
जीवों को सुख शांती प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांती प्रदायि।।

ॐ शांती-शांती-शांती (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् कायोत्सर्ग करोम्यहम्)

विसर्जन पाठ

(ठोने में पुष्प क्षेपण करें)

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान॥
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन॥
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

आशिका लेने का पद

दोहा- लेकर जिन की आशिका, अपने माथ लगाय।
दुख दरिद्र का नाश हो, पाप कर्म कट जाय॥

आरती

तर्ज वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्...

जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पदधारी गुणवान की॥टेक॥
वन्दे जिनवरम्...
नगर हस्तिनापुर में जन्में, मात पिता हर्षाए थे-2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, के जो लाल कहाए थे-2

द्वार-द्वार पर बजी बधाई, जय हो कृपा निधान की।
जगमग-जगमग....।।1।।
जान के जग की नश्वरता को, जिनवर दीक्षा पाई थी-2
त्याग तपस्या देख आपकी, यह जगती हर्षाई थी-2
देवों ने भी महिमा गाई, नाथ आपके ध्यान की।
जगमग-जगमग....।।2।।
हर संकट में जग के प्राणी, प्रभू आपको ध्याते हैं-2
भाव सहित गुण गाते नत हो, पूजा पाठ रचाते हैं-2
महिमा गाई है संतों ने, वीतराग विज्ञान की।
जगमग-जगमग....।।3।।
शांतिनाथ जी भवि जीवों को, अतिशय शांती प्रदान करें।
शांती पाते हैं वे प्राणी, जो प्रभु का गुणगान करें।।
हर दुखियों का संकट हरती, महिमा अतिशयवान की।
जगमग-जगमग....।।4।।
शांती प्रदायक शांती प्रभु की, आरति करने आए हैं-2
चरण शरण के भक्त मनोहर, द्वीप जलाकर लाए हैं-2
'विशद' करें हम जय-जयकारे अतिशय क्षेत्र महान की।
जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।।5।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनधरम्।।टेक।।

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा

परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार॥
निर्विकार प्रभु शोभते, जिनवर शांतिनाथ।
चालीसा गाते 'विशद', करते हम गुणगान॥

चौपाई

जम्बू द्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया॥1॥
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी॥2॥
नगर हस्तिनागपुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी॥3॥
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांती जिन गाए॥4॥
माँ के गर्भ में प्रभु जब आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए॥5॥
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो॥6॥
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी॥7॥
जन्म प्रभु जी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया॥8॥
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया॥9॥
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्त्र नेत्र से दर्शन पाया॥10॥
पग में हिरण चिन्ह शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया॥11॥

पञ्चम चक्रवर्ती कहलाए, कामदेव बारहवे गाए।।12।।
तीर्थंकर सोहलवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।।13।।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।।14।।
सहस्त्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।।15।।
नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुख मिटाया।।16।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।।17।।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।18।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।।19।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।20।।
एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।21।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, तपकल्याणक प्रभु का मानो।।22।।
आत्म ध्यान कीन्हें तब स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।।23।।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई।।24।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।।25।।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।।26।।
छत्तीस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।।27।।
यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।।28।।
योग निरोध किये जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।।29।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।30।।

नौ सौ मुनि श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ती पाए॥31॥
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया॥32॥
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई॥33॥
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले॥34॥
शांती भक्ति जो पढ़े पढ़ाएँ, वे भी अतिशय शांती पाएँ॥35॥
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में साद शीश झुकाते॥36॥
भाव सहित जो दर्शन पाते, वे अपने सौभाग्य जगाते॥37॥
सुत के इच्छुक सुत उपजाते, निर्धन जीव सम्पदा पाते॥38॥
रोगी अपने रोग नशाते, अज्ञानी सद्ज्ञान जगाते॥39॥
'विशद' भाव से महिमा गाएँ, हम भी मोक्ष महापद पाएँ॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुनें जो लोग।
सुख शांती सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग॥
शांतिनाथ के चरण को, ध्यायें जो गुणवान।
अल्प समय में ही 'विशद', पावें वह निर्वाण॥

पंचाचार परायणः सुमुनयः रत्नत्रयाराधकः।
द्वादश तप त्रय गुप्ति गोपन परः दश धर्म संराधकः॥
समता वन्दन स्तुति प्रतिक्रमण, स्वाध्याय ध्यानः परः।
आचार्या त्रय लोक पूजित पदः, वन्दे विशदसागरम्॥

ॐ ह्रूं परम पूज्य आचार्य श्री विशदसिन्धु गुरवे नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।